28 / 04 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सर्वस्व त्यागी बन गुण सम्पन्न बनने का अनुभव

➢➢ ब्रह्मा बाबा की चरित्र गाथा पढ़ते हुए खो जाती हूं...

➳ _ ➳ मनुष्यता से देवत्व को पाने वाले...

→ इस धरती की सर्वश्रेष्ठ पहली आत्मा...

→ अलौकिक, अद्भुत चरित्र है उनका...

→ महान आत्मा हैं...

→ पल भर में सबकुछ त्यागने वाले...

■ सर्वस्व त्याग द्वारा ईश्वर पर न्यौछावर होने वाले...

➳ _ ➳ गौरवान्वित अनुभव करती हूं स्वयं को...

➳ _ ➳ ऐसे विश्व रचियता शिव बाबा और सृष्टि रचियता ब्रह्मा बाबा को पाकर...

→ मैं आत्मा इनकी सन्तान हूं...

➳ _ ➳ कानों में सुनाई देते हैं ब्रह्मा बाबा के अंतिम शब्द...

→ संकल्प में सदा निराकारी...

→ वाणी में सदा निरहंकारी...

→ कर्म में हर कर्मेन्द्रिय द्वारा निर्विकारी...

■ इनकी सन्तान होना अर्थात इन समान होना...

➢➢ मैं महान पिता की महान सन्तान हूं...

➳ _ ➳ फॉलो फ़ादर करने वाली आत्मा हूं...

➳ _ ➳ बाप के कार्य को सम्पन्न करने वाली आत्मा हूं...

➳ _ ➳ तो मैं अपने अंदर श्रेष्ठता, गुणवत्ता को धारण कर रही हूं...

→ सर्वंश त्यागी बनने के लिए...

➳ _ ➳ अपनी सूक्ष्म चेकिंग द्वारा समाप्त कर रही हूं...

→ विकारों के अंश को...

→ उनके वंश को...

→ व्यर्थ को...

■ इनके रॉयल रूप का भी स्पर्श नही करती...

➳ _ ➳ मैं सर्वशक्तिमान की संतान हूं...

➳ _ ➳ उनसे गुण और शक्तियों को ले रही हूँ...

➳ _ ➳ इनसे पवित्र बना रही हूं...

→ अपनी मनसा को...

→ वाचा को...

→ कर्मणा को...

→ सम्बन्ध, सम्पर्क को भी...

■ ज्ञान सूर्य के द्वारा मेरे जीवन में से अंधकार समाप्त हो प्रकाश में बदल गया है...

➢➢ मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूं...

➳ _ ➳ तो दातापन की विशेषताओं को धारण कर रही हूं...

→ मेरे अंदर दातापन की भावना जागृत होती जा रही है...

→ स्वयं में बदलाव के लिए मैं आत्मा हर पल तत्पर हूं...

→ मुझ में निर्मानता का गुणआता जा रहा है...

➳ _ ➳ गुणमूर्त बन गुणों को धारण कर रही हूं...

→ सर्व में गुणों को देखती हूं...

■ होली हंस बन गुणों को धारण कर रही हूं...

■ किसी के भी अवगुणों को देखते समझते भी बुद्धि द्वारा धारण नही करती हूं...

■ दातापन के गुण द्वारा सबको गुणों का दान करती हूं...

➳ _ ➳ शुभ भावना द्वारा परिवर्तन कर रही हूं...

→ कमजोर परिस्थितियों को...

→ वायुमण्डल को...

→ वृति को...

■ शक्तिशाली बन इन सबको भी शक्तिशाली बना रही हूं...

➳ _ ➳ जिम्मेवार आत्मा हूं तो मैं पन हटा कर...

➳ _ ➳ बेहद की निम्मित आत्मा बन गयी हूं।

➳ _ ➳ इच्छा मात्रम अविद्या को धारण कर...

→ मन से तंदरुस्त बन गई हूं...

→ सदा मनमनाभव की स्थिति में रहती हूं...

→ सदा एक की ही स्मृति में रह सदा एकरस रहती हूं...

→ अचल रहती हूं...

→ नम्बर वन आत्मा के गुणों को धारण करती जा रही हूं...

■ सर्वस्व त्याग द्वारा मैं सम्पन्न ओर सम्पूर्ण आत्मा बन गयी हूं।

■ उड़ती कला में उड़ते पंछी समान अनुभव कर रही हूं।

■ गुणमूर्त बन अपनी विशेषताओं का महा भोग बापदादा को अर्पण कर रही हूं।